वर्चुअल रियलिटी, साइबर संस्कृति और इंटरनेट

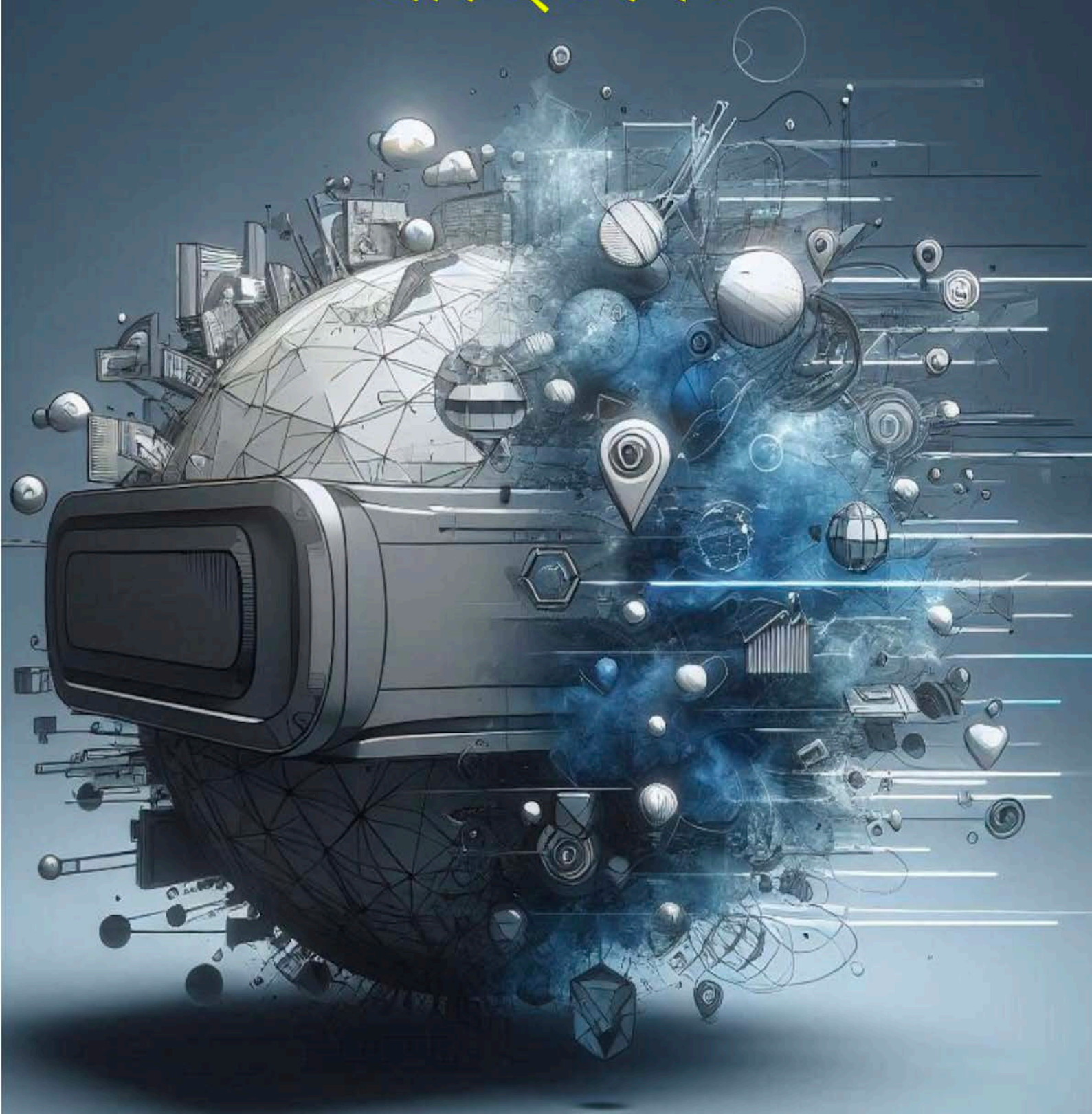

जगदीश्वर चतुर्वेदी

भूमिका

प्रस्तुत पुस्तक साइबर संस्कृति और वर्चुअल रियलिटी के विविध पहलुओं का विस्तार से उद्घाटन करती है। हिंदी में अपने किस्म की यह पहली किताब है। संचार क्रांति, सूचना क्रांति और साइबर संस्कृति के जटिल सवालों पर भारत में बहुत कम बहस हुई है। हिंदीभाषी समाज तो इस बहस से एकदम अछूता है। जिस तरह सोशल मीडिया और संचार के विभिन्न रूपों का विकास हुआ है। उससे अनेक नई सामाजिक-राजनीतिक-सांस्कृतिक समस्याएँ सामने आई हैं। इस किताब में सूचना क्रांति के राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य को साइबर संस्कृति और वर्चुअल रियलिटी के विशेषज्ञों के नजरिए से विश्लेषित किया गया है। आशा है यह पुस्तक मीडिया अध्येताओं और छात्रों के लिए उपयोगी साबित होगी।

जगदीश्वर चतुर्वेदी
भूतपूर्व अध्यक्ष, हिंदी विभाग और प्रोफेसर
कलकत्ता विश्वविद्यालय

अनुक्रम

भूमिका 5

पहला खण्ड
ज्ञान-क्रांति और साइबर संस्कृति

संप्रेषण कलाओं का ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य 1
उत्तर-औद्योगिक समाज [illegible]
जनसमाज [illegible]
एशिया में उपग्रह-क्रांति [illegible]
नई संस्कृति की राह [illegible]
संचार-क्रांति और साहित्य [illegible]
भारत में संचार-क्रांति का इतिहास [illegible]
सूचना-समाज और सेवा क्षेत्र [illegible]
सूचना तकनीक के विकास का ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य [illegible]
सूचना-समाज के सबक [illegible]
विषम सूचना-संसार [illegible]
सूचना उद्योग का राष्ट्रीय परिदृश्य [illegible]
तीसरी लहर की संवेदना [illegible]
सूचना-समाज [illegible]

दूसरा खण्ड
इंटरनेट और [illegible]

इंटरनेट इतिहास, भाषा और पोर्न [illegible]

इंटरनेट युग की चुनौतियाँ 269
वर्चुअल रियलिटी का सौंदर्य 288
हाइपर टेक्स्ट की समस्याएँ 302
हाइपर टेक्स्ट : डिजिटल पत्रकारिता और साहित्यालोचना 315
हाइपर मीडिया : अभिरुचियों का विस्फोट 335
साइबर स्पेस की स्वायत्तता 363
हाइपर कैफे 373
हाइपर टेक्स्ट के राजनीतिक पहलू 377
मौलिकता का प्रश्न और कॉपीराइट 391
कंप्यूटर और वीडियो गेम 404

पहला खण्ड

ज्ञान-क्रांति और साइबर संस्कृति

संप्रेषण कलाओं का ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य

संप्रेषण का अर्थ मात्र सूचनाओं का संचार करना नहीं है। संप्रेषण का अर्थ मात्र मानवीय हाव-भाव का ही संचार करना भी नहीं है। संप्रेषण' का अर्थ है मनुष्यों के भावों, विचारों, संवेदनाओं और मानवीय क्रियाओं को व्यक्ति से व्यक्ति की तरफ संचार, यही संचार-संबंध है। यह प्रक्रिया समाज-सापेक्ष है। मनुष्य ने 'संप्रेषण' की जरूरत सिर्फ संप्रेषण के लिए ही महसूस नहीं की थी, बल्कि 'संप्रेषण' की जरूरत उसे श्रम की प्रक्रिया के दौरान महसूस हुई। श्रम की प्रक्रिया के दौरान ही संप्रेषण-कला के विभिन्न रूपों का जन्म हुआ। संप्रेषण कलाओं का जन्म मनुष्य की सीखने और सीखे हुए को ठोस रूपों में व्यक्त करने के संघर्ष की प्रक्रिया में हुआ था। यह प्रक्रिया मस्तिष्क से संचालित होती है। पर, मस्तिष्क की गतिविधि स्वायत्त नहीं है, वह भौतिक प्रदार्थों से क्रिया प्रतिक्रिया में ही अपने प्रेरक तत्वों को संग्रहीत करती है और उन्हें रूपांतरित करती है। इसीलिए संप्रेषण कलाएँ न तो देवी शक्ति की देन हैं और न ही संप्रेषण कलाओं का दैवी प्रेरणा से कोई लेना-देना है।

संप्रेषण कला के रूपों का तत्कालीन समाज की उत्पादन संबंधों की स्थिति से द्वंद्वात्मक संबंध होता है। इसलिए संप्रेषण कलाओं और संचार की प्रक्रिया का अध्ययन उत्पादन संबंधों के स्वरूप और प्रकृति से विच्छिन्न करके नहीं किया जा सकता। 'संप्रेषण' मात्र संचार भर नहीं होता, अपितु, सामाजिक प्रक्रिया को निर्धारित करनेवाला एक महत्त्वपूर्ण तत्व होता है।

संप्रेषण कलाओं के नित नूतन आविष्कार की प्रक्रिया के पीछे मनुष्य की कार्य की दिशा की ओर आगे बढ़ने की इच्छाशक्ति और सक्रियता की बहुत बड़ी भूमिका रही है। कार्य की प्रक्रिया में और कार्य के जरिए ही जीवित प्राणियों को एक-दूसरे से कुछ कहने की अनिवार्य आवश्यकता महसूस हुई और इसी के कारण संप्रेषण कलाओं का जन्म हुआ।